# आरती श्री त्रिवेणी जी की

जय माता जय तेरी जय श्री तिरवेनी ।
यमुन गंग से सेवित, अग जग सुख देनी ।।
तीरथ राज प्रकाशित, गुरु ग्रह नित सेव्या ।
अमल अनूप अमियजल, देती मां दिव्या ।।
निर्गुण स्म तुम्हारा, जो नर लख पाता ।
ज्ञान ध्यान से शोभित, तेरे गुण गाता ।।
अन्तर्वेदी में मां, महिमा जग जानी ।
तेरी पूजा करके, धन्य होत प्राणी ।।
यज्ञ दान तप पूजन श्रद्धा से होते ।
कितने भक्त तुम्हारे, लगा रहे गोते ।।
कुम्भ पर्व पर मैया, गुरुरवि-चन्द्र मिलें ।
तेरा मज्जन पूजन, कर मन कमल खिलें ।।
संगम जग विख्याता, विश्व करे सेवा ।
मोक्ष जीव को देती, धन्य-धन्य हो देवा ।।
मात त्रिवेणी की आरती, जो नर नित गावे ।
सुख रहे इस जग में, अन्त स्वर्ग जावे ।।

# विवरण

जिसमें गंगा एवं यमुना भी समाहित हैं तथा जो संसार के सर्व सुख की दात्री हैं, ऐसी त्रिवेणी माता जी की जय हो । जो सभी तीर्थों में उत्तम हैं, तथा जिनकी गुरु ग्रह सेवा करते हैं, ऐसी दिव्य माता का जल अत्यन्त स्वच्छ एवं अमृत के समान है ।

हे माता! तुम्हारे स्म एवं गुणों को कोई जान पाता तो वह आपका तन-मन से ध्यान कर आप ही के गुणों को गाता रहता । हे माँ, आपकी महिमा को सारा संसार जानता है - तथा आप हमारे मन की देवी हो । आपकी सेवा से हम प्राणी कृत्य-कृत्य हो जाते हैं ।

आपके स्वच्छ जल में गोते लगा - लगा कर आपके भक्त गण स्नान करते हैं तथा श्रद्धा से आपकी पूजा करते हुए दान भी देते हैं । हे त्रिवेणी मइया! कुम्भ के पर्व पर गुरु, सूर्य एवं चन्द्रमा सभी मिल जाते हैं तथा आपकी पूजा करके उनका मन कमल के समान खिल जाता है ।

आपका ये संगम सम्पूर्ण जगत में प्रसिद्ध है तथा जिसका सारा संसार सेवा करता है । आप सभी प्राणियों को मोक्ष प्रदान करने वाली हो, जिससे सभी देवतागण भी धन्य हो जाते हैं । इस माता त्रिवेणी जी की आरती जो कोई भी गाता है, वह इस संसार में सुखमय जीवन व्यतीत करता है तथा अन्त समय में वह स्वर्ग को जाता है ।

---

**visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions**.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.